पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल ने स्वामी रामदास की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की

लखनऊः 11 मार्च, 2016

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज सीतापुर स्थित नैमिषारण्य में श्री सतगुरू समर्थ स्वामी रामदास जी मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लिया। इस अवसर पर श्री महंत बजरंगदास महाराज तथा समर्थ सेवा मण्डल ट्रस्ट के सदस्यगण व महाराष्ट्र से बड़ी संख्या में आये भक्तजन सहित अन्य लोग भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने नैमिषारण्य की महता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नैमिषारण्य भारतीय संस्कृति का लौह चुम्बक है। जम्मू कश्मीर हो, आसाम हो, उत्तर पूर्व के राज्य हो या सुदूर ग्रामीण क्षेत्र हो, नैमिषारण्य सभी को अपनी ओर खींचता है। आस्था रखने वालों के अलावा जो लोग भारतीय संस्कृति तथा इतिहास जानना चाहते हैं वे भी नैमिषारण्य की विशेषता जानने के लिए आते हैं। उन्होंने कहा कि विदेशों से भी लोग नैमिषारण्य जैसे आध्यात्मिक केन्द्र को देखने आते है।

श्री नाईक ने कहा कि नैमिषारण्य में सतगुरू समर्थ स्वामी रामदास की प्रतिमा होना सौभाग्य की बात है। नैमिषारण्य आने वाले श्रद्धालुओं के लिए स्वामी रामदास जो कि महाराष्ट्र के थे, के बारे में जानने से जानकारी में एक नया अध्याय जुडेगा। शिवाजी महाराज के स्वराज स्थापना में स्वामी रामदास का महत्वपूर्ण योगदान है। शिवाजी स्वामी रामदास जी को अपना गुरू मानते थे। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की जानकारी के लिए स्वामी रामदास के बारे में एक शिलापट्ट हिन्दी में लगाया जाए। महाराष्ट्र के गोंदवलेकर महाराज की भी यह तपोभूमि है। महाराष्ट्र में उनका विशेष महत्व है।

राज्यपाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र का पुराना रिश्ता है। काशी के गंगा भट्ट ने शिवाजी महाराज का अभिषेक किया था तब वे छत्रपति बने थे। शिवाजी महाराज ने भिक्षा में स्वामी रामदास को पूरा राज्य दे दिया था। स्वामी रामदास ने 350 वर्ष पहले सुशासन का मंत्र तब दिया जब लोग प्रबंधन के बारे में नहीं जानते थे। उन्होंने कहा कि नैमिषारण्य में स्वामी रामदास की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा सोने में सुगंध जैसी है।

समारोह में अन्य लोगों ने भी अपने विचार रखे।

अंजुम/ललित/राजभवन(101/23)